उपसंहार

उपसंहार

'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में चित्रित परिवार का स्वरुप इसका संपूर्ण अध्ययन करने के पश्चात मेरे लघुशोध प्रबन्ध का निचोड यह है, कि स्वातंत्र्योत्तर काल में उषा प्रियंवदा एक सफल, आधुनिक लेखिकाओं में अग्रणीय रूप में सामने आयी। उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तकें संख्या की दृष्टि से गिनी जा सकती है, पर स्तर की दृष्टि से उनका साहित्य उच्च है, उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य परिवारों के विभिन्न पक्षों को अपने साहित्य में बहुत ही सच्चाई के साथ दिखाया है। इसका कारण शायद यहीं रहा होगा, कि जन्म से भारतीय होने के नाते वे भारतीय समाज से घनिष्ठ परिचित है ही, साथ ही पाश्चात्य समाज में रहने के कारण उसके जन जीवन तथा अच्छाई - बुराई को भी देखा परखा है। तभी तो उन्होंने अपने साहित्य में पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित भारतीय परिवार का यथार्थ चित्रण किया है। उषा प्रियंवदा भारतीय वातावरण में रह चुकी है और अमरीकी परिवेश में रह रही है। अत: उन दोनों परिवार और परिवेश से वे प्रभावित है उनकी साहित्य कृतियों को देखकर यह बात स्पष्ट होती है।

प्रथम अध्याय में मैंने उषा प्रियंवदाजी का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनके सभी उपन्यास और कथा कहानी संग्रहों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व और कृतित्व को उजागर करने का प्रयास किया है। उषा प्रियंवदाजी का जन्म २४ दिसंबर १९३१ में कानपुर में हुआ। उनका बचपन संयुक्त परिवार में बीता है। बचपन से ही उनकी रुचि साहित्य लेखन की तरफ रही है। आज वह अमरीका में रहकर साहित्य - सृजन कर रही है वही पर उन्होंने वहाँ के भाषाविद श्री.किम. विल्सन से शादी कर ली है। उनकी विशेष बात तो यह है कि वहाँ रहकर उन्होंने भारतीय निम्नमध्यवर्गीय परिवार में रहनेवाली नारियों का चित्रण किया है। उनकी पहली कहानी 'लालचूनर' है जो 'सरिता' पत्रिका में छपी थी। उन्होंने तीन उपन्यास और बारह कहानियाँ, और अंग्रेजी में भी कविताएँ लिखी परंतु बाद में उन्हें एहसास हुआ कि भविष्य में अपने मातृभाषा में ही लेखनकार्य संभव हो सकेगा इसलिए

उन्होंने कहा है --" हिन्दी ही मेरी भाषा है यदि कुछ वर्षव्हारल
मुझसे लिखा जाएगा, तो हिन्दी में ही।"[१]

उषाजी का स्वातंत्र्योत्तर, आधुनिक युग की कथा लेखिकाओं में अग्रणी नाम है। वह व्यक्तिवादी विचारधारा से प्रभावित है जिसके परिणाम स्वरुप उनके "पचपन सम्में लाल दीवारें" उपन्यास में व्यक्ति की कुण्ठा, पीडा, अकेलापन, संत्रास आदि का चित्रण दिखाई देता हैं। उषा प्रियंवदाजी का "पचपन सम्में लाल दीवारें" उपन्यास में प्रत्यक्ष रुप से तो परिवार का चित्रण नहीं है पर उपन्यास की नायिका सुषमा के व्यक्तित्व को बनाने में परिवार का महत्वपूर्ण हाथ रहा है। उपन्यास में सुषमा के साथ काम करनेवाली प्राध्यापिकाओं के जीवन पर भी उनके परिवार का ही असर पड़ता दिखाई देता है। तो इस प्रकार उपन्यास में विभिन्न प्रकार की परिवारों की झलक दिखाई दे देती है। जैसे उषाजी ने --"गागर में सागर भर देना" ऐसा चित्रण कर दिया है।

मेरे लघु शोध-प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय का शीर्षक "परिवार से तात्पर्य" है क्योंकि मेरा विषय प्रमुख रुप से उपन्यास में चित्रित परिवार का स्वरुप ही है इसलिए सर्व प्रथम परिवार को समझना आवश्यक होता है, परिवार क्या है ? उसकी विशेषता क्या है ? और उसका स्वरुप किस प्रकार का है ? परिवार में परिवर्तन क्यों आता है ? और परिवार के विभिन्न रुपों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। परिवार का वर्गीकरण जैसे" संयुक्त परिवार, विभक्त परिवार, पितृमूलक परिवार, मातृमूलक परिवार, एकपत्नी परिवार, बहुपत्नीत्व परिवार, बहुपतीत्व परिवार, सांस्थापिक परिवार और साहचर्य परिवार आदि परिवारों पर संक्षिप्त चर्चा की है। परिवारों का चौमुखी अध्यायन करने के पश्चात मै इस प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि" परिवार" समाज की महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जिससे मानव के आत्मसंरक्षण, वंशवर्धन और जातीय विकास के हेतु निर्माण किया गया है। भिन्न-भिन्न विचारकोंने परिवार सन्दर्भ में विभिन्न प्रकार से अपने विचार व्यक्त किये है। सभी

---

१ उषा प्रियवंदा - मेरी प्रिय कहानियाँ (भूमिका) राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण, १९७४, पृ.५।

परिभाषाओं का अध्ययन करने पर सार रुप में एक बात सामने आती है कि --

" परिवार एकाधिक व्यक्तियों का वह समूह है, जो विवाह या रक्त संबंध के कारण पारस्पारिक हितचिंतन करते हुए साहचर्य भाव से एक ही घर में रहकर वैयक्तिक विकास करने के लिए साथ-साथ " परिवार " के व्यक्तित्व का भी निर्माण करता है। "

परिवार मनुष्य के लिए अत्यावश्यक घटक है क्योंकि परिवार से ही " समाजरचने की बुनियाद " रची जाती है। मनुष्य के जीवन में सुख-दु:खों का अनन्य साधारण महत्व " परिवार " ही रखता है।

मेरे लघु शोध-प्रबन्ध के तृत्तीय अध्याय का शीर्षक " उपन्यास का संक्षिप्त परिचय " है। मेरे लघुशोध प्रबन्ध का प्रमुख आधार " पचपन खम्भे लाल दीवारें " उपन्यास है इसलिए प्रस्तुत अध्याय में उसकी समीक्षा करते हुए संक्षिप्त कथानक को बताया है। कथानक को बताना और कथानक की समीक्षा लिखना मैंने इसलिए आवश्यक समझा कि जिससे कथानक और समीक्षा को पढकर मेरे लघुशोध प्रबन्ध का ठीक से मूल्यांकन हो सके। कथानक को पढकर मुझे ऐसा लगा कि उषा प्रियंवदाजी ने भारतीय,उच्चशिक्षित,सनातनी विचारों की, मध्यमवर्गीय दब्बू लडकी को दिखाया है। दूसरी तरफ कथानक को पढकर ऐसा लगता है कि अकेली सुषमा ही नहीं ऐसी अनेकों भारतीय सुषमाएँ है जो आर्थिक मजबूरी के कारण परिवार का घर का भार ढोते-ढोते कुँवारी रह जाती है और अकेली इस दु:ख को झेलती रहती है उषाजी ने " पचपन खम्भें लाल दीवारें " उपन्यास में भारतीय संयुक्त परिवार को प्रस्तुत किया है। उनमें व्यक्ति के स्तर पर होने वाले बिखराव और टूटन का चित्रण अत्यंत सफलता से किया है क्योंकि उपन्यास में हर कोई पात्र बिखराव एवं निराशा का शिकार बन रहा है। जैसे उपन्यास की नायिका " सुषमा " एक ऐसी नारी है जो परिवार के लिए अपने प्रेम या शादी की बात टालती है। सामाजिक एवं पारिवारिक विषमता के कारण वह प्रेम नहीं कर पाती और शादी भी नहीं कर पाती।

" पचपन खम्भें लाल दीवारें " उपन्यास में घर की,परिवार की आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक स्थिति का यंत्रणाको बडे मार्मिकता से उषा प्रियंवदाजी ने चित्रित कर दिया है। छात्रावास के " पचपन खम्भें लाल दीवारें " उन

परिस्थितियों के प्रतीक है, जिनमें रहकर सुषमा को ऊब और घुटन का तीखा अहसास होता है, लेकिन फिर भी उन परिस्थितियों के बीच जीना ही उसकी नियती है। मध्यवर्गीय पारिवारिक संघर्ष के परिवार में होनेवाले प्रेम और विवाह तथा आर्थिक शोषण की समस्या को ही उपन्यास में चित्रित किया है। सार रुप में ` पचपन खम्भे लाल दीवारें `, उपन्यास पढते समय ऐसा लगता है जैसे कि हम संयुक्त परिवार और छोटा परिवार को बहुत ही पास से देख रहे हैं। इन परिवारों में सदस्यों की बातचीत संघर्ष, नोंक-झोंक, सुख-दु:ख सभी कुछ बहुत ही सफलता के साथ दिखाया है।

मेरे लघुशोध-प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय का शीर्षक ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में चित्रित परिवार का स्वरुप है। ` मैंने द्वितीय अध्याय में यह बताने का प्रयास किया है कि परिवार से तात्पर्य क्या है ? लेकिन प्रस्तुत चतुर्थ अध्याय में ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में परिवार का स्वरुप क्या है ? उपन्यास में परिवार किस रुप में आया है ? ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में परिवार का वर्गीकरण किस प्रकार का है जैसे संयुक्त परिवार विभक्त परिवार बनाने के लिए विवाह की आवश्यकता आदि बातों की विवेचना की है। आज भारतीय परिवार अपनी परंपराओं से मुक्त होकर नई जीवन दृष्टि को अपना रही है। जो संयुक्त परिवार और विभक्त परिवार में चित्रित किया है। विवाह से पति-पत्नी दोनों में ही एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव के कारण त्याग की भावना विकसित होती है ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में नीरु और सुभाष का विवाह। मुख्यत: परिवार पति-पत्नी से ही बनता है, क्योंकि पति-पत्नी अत: दम्पत्ति

विवाह के द्वारा नवदाम्पत्ती का दाम्पत्य जीवन प्रारंभ होता है और दाम्पत्य जीवन ही परिवार की आधारशिला है। पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में नीरु और सुभाष के पारिवारिक दाम्पत्य जीवन को चित्रित किया गया है। दाम्पत्य जीवन सफल और असफल दोनों ही प्रकार का हो सकता है और यह दोनों ही रुप ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में दिखाई दे रहा है। जिस परिवार में पति-पत्नी में परस्पर श्रध्दा और प्रेम रखते है तो वहाँ परिवार में

सफल दाम्पत्य जीवन दिखाई देता है। जैसे `पचपन खम्में लाल दीवारें` उपन्यास में नारायण का सुखी सफल दाम्पत्य परिवार है और वह भी प्रतिष्ठित एवं संपन्नता से परिपूर्ण ऐसा परिवार दिखाई देता है। कभी-कभी पति-पत्नी दोनों एक दूसरे से अलग दूर रहते हैं फिर भी प्रेम और श्रध्दा के धागे में बँधे होने के कारण उनका सफल दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते हैं। `पचपन खम्में लाल दीवारें` उपन्यास में मीरा दीदी के पति तेरह साल बाहर रहते हुए भी उनमें उनका परिवार सुखी एवं सफल दिखाई देता है।

ऐसा समझा जाता है कि अनमेल विवाह सदैव असफल ही रहते हैं पर ऐसा नहीं है कभी-कभी विश्वास, श्रध्दा और प्रेम के कारण अनमेल विवाह भी सफल होते दिखाई देते हैं। `पचपन खम्में लाल दीवारें` उपन्यास में स्वाति और उनका धनवान अधेड पति का भी अनमेल विवाह हुआ था, फिर भी उनका दाम्पत्य जीवन सफल है। परिवार में पवित्र प्रेम ही सफल दाम्पत्य जीवन की आधारशिला है। पति-पत्नी के बीच पारस्पारिक सम्बन्ध, समन्वय, सामजंस्य, अच्छी वैचारिकता होनी आवश्यक होती है और उससे ही गृहस्थी रुपी गाडी सुचारु रुप से चलती है। इसके विपरित हमें असफल दाम्पत्य जीवन दिखाई देता है जैसे परिवार में वैचारिक एकता, स्वभावगत साम्य, स्त्री को उच्च शिक्षा इतना ही नहीं संयुक्त परिवार इनमें यदि दाम्पत्य जीवन में या परिवार में पति-पत्नी के बीच यह विशेषाता नहीं दिखाई देती तो उनका दाम्पत्य जीवन असफल ही माना जाता है।

दाम्पत्य जीवन विघटन के कारण परिवार का बिखराव होता दिखाई देता है क्योंकि ग्राहस्थ जीवन रुपी रथ के दो पहिए है अगर उनका ही सतुंलन खो जाए तो परिवार रुपी रथ चल नहीं सकता इसलिए उषा प्रियंवदाजी यह चाहती है कि परिवार के लोगों में समझौता हो, इसी के बलबूते पर परिवार रुपी इमारत दृढता से खडी रहती है। यह स्पष्ट होता है।

परिवार में पति-पत्नी संबंध के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण संबंध भी होते है जो प्रेम आत्मीयता के सूत्र में बँधे रहते है। यह सम्बन्ध परिवार में कितने घनिष्ठ

होता है` पचपन खम्मे लाल दीवारें ` उपन्यास के परिवार में सुषमा के माता-पिता का सम्बन्ध, उनके सन्तान का सम्बन्ध,भाई-बहन का सम्बन्ध ,ननंद-भाभी का सम्बन्ध,परिवार में बुआ का सम्बन्ध, और देवर-भाभी का सम्बन्ध आदि अन्य पारस्पारिक सम्बन्धों की सुन्दर झाँकी,प्रस्तुत की है। परिवार में विवाह, जन्मोत्सव,मुंडन आदि विविध उत्सव होते हैं` पचपन खम्मे लाल दीवारें ` उपन्यास में नीरु और सुभाषा का विवाह, नारायण के बेटे का जन्मोत्सव आदि। और ऐसे रीति-रिवाजों से ही एक सुसंगठित अच्छासा` परिवार` बनता है।` परिवार` संयुक्त, विभक्त प्रकार का होता है उनमें सुख-दु:ख दोनों ही होते हैं।

परिवार में सन्तान उत्पन्न होना वंश परंपरा को चलाने के लिए,समाज को चलाने के लिए बहुत जरुरी है।` पचपन खम्मे लाल दीवारें` उपन्यास में भी नारायण के घर बच्चा जन्म लेता है, बच्चे की आगमन की खुशी में खुशियाँ मनायी जा रही है। मिलने-जुलने वाले नवशिशु को नये नये उपहारों से स्वागत करते है, सुषमा भी ऐसी ही नारायण के घर जाती है।

मेरे लघु शोध-प्रबन्ध के पचंम अध्याय का शीर्षक` उपन्यास में चित्रित पारिवारिक विभक्त समस्याएँ है। मैंने सब समस्याओं का मूल्यांकन किया, उसमें परिवार से सम्बन्धित अलग-अलग समस्या दिखाई देती है। यह कल्पना ही नही की जा सकती कि मानव समस्या विहीन हो,लेकिन अंत समय तक मनुष्य के साथ कुछ न कुछ समस्याएँ होती है। परिवार तो समस्याओं का भंडार है। परिवार में अनेक प्रकार की समस्याएँ होती है जैसे परिवार में लड़की जब जन्म लेती है उसी दिन से माता-पिता को लड़की के विवाह की चिन्ता शुरु होती है। जब तक उसकी शादी नहीं होती तब तक विवाह की समस्या बनी ही रहती है, उससे विवाह की समस्या निर्माण होती है। नये एवं पुराने विचारों के संघर्ष के कारण वैवाहिक असंगतियाँ उत्पन्न हो रही है एक ओर अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाहों ने अनमेल विवाह की समस्या को जन्म दिया है तो दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा से प्रभावित युवक - युवतियाँ ने स्वच्छन्द प्रेम विवाह पध्दति को स्वीकार किया है। लेकिन वह प्रस्तुत उपन्यास में असफल ही दिखाई देता है।

लेकिन विवाह न होना भी एक समस्या है क्योंकि आजकल लडकियाँ बहुत पढती है,नौकरी करती है और अपना परिवार सँभालती है इनका परिणाम विपरीत ही दिखाई देता है। जैसे`पचपन खम्भे लाल दीवारें`उपन्यास में कमानेवाली बडी बेटी सुषमा का विवाह उसके माँ-बाप नहीं करते क्योंकि उसकी कमाई पर ही परिवार की गुजर बसर हो रही है, और वे अपनी छोटी बेटी नीरु का विवाह कर डालते है। वैसे ही और एक पात्र है मिस शास्त्री है। आजकल नारी नौकरी करने लिए उच्चशिक्षा लेती है और उससे उसकी आयु बढती जाती है इससे अविवाहित प्रौढा नारी की समस्या उत्पन्न होती है। जैसे`पचपन खम्भे लाल दीवारें`उपन्यास की सुषमा, एक उच्चशिक्षित,आर्थिक स्वातंत्र्य से परिपूर्ण ऐसी नारी को भी आयु बढने के कारण और परिवार की जिम्मेदारी सँभालने के कारण उसे अविवाहित रहना पडता है।

विवाह और मातृत्व का सम्बन्ध स्त्री के लिए सामाजिक रीतियाँ - नीतियों के अनुसार ही सुविचारी तथ्य रहा है। पुन: नारी की सुरक्षा के लिए भी मातृत्व का सम्बन्ध विवाह से जुडा गया है क्योंकि बच्चा पुरुष के शरीर से नहीं जुडता इसलिए वह पुरुष कभी भी स्त्री से पीछा छुडा सकता है जैसे`पचपन खम्भे लाल दीवारें`उपन्यास की स्वाति सेन किसी युवक के साथ प्रेम करती है फलस्वरुप वह कुमारी माता बन जाती है लेकिन इस समस्या से बचने के लिए वह बच्चे की भृणहत्या कर देती है।

धन के कारण परिवार में बहुत सी समस्या निर्माण होती है`पचपन खम्भे लाल दीवारें`उपन्यास में सुषमा का परिवार ही देखिए उनके पिता की बिमारी, बहनों की शादी उससे दहेज की समस्या उत्पन्न होती है और उससे ही अनमेल विवाह हो जाते है। उदा. के लिए मीनाक्षी का विवाह। इस तरह परिवार में धन की कमी होने के कारण परिवार असंतुष्ट दिखाई देता है। उससे आर्थिक समस्या पैदा होती है।

पुनर्विवाह से यह अर्थ लगाया जाता है कि पति या पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह कर लिया जाय अक्सर पत्नी के मृत्यु के बाद पति का विवाह हो जाता

है। जब किसी औरत का दूसरा विवाह होता है तो उसे पुनर्विवाह का नाम दिया जाता है। पुनर्विवाह नाम ही नारियों के संदर्भ में आता है। पुरुषों के सन्दर्भ में ऐसा नहीं कहा जाता है पर मेरे विचार में यदि पति मरने के पश्चात फिर से विवाह करता है तो वह भी उसका पुनर्विवाह है। ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में सुषमा के पिता दहेजु है उन्होंने पुनर्विवाह किया है। परंतु सुषमा की माँ विशेष संतुष्ट और खुश नहीं दिखाई देती है।

धन की कमी होने से सबसे भयंकर समस्या उत्पन्न होती है वह है कुछ युवतियों का राह से भटकर वेश्यावृत्ति को अपनाना और गंदे साधनों से पैसा कमाकर अपना परिवार चलाने का। पचपन खम्भे लाल दीवारें उपन्यास में रेणु - भटनागर का परिवार भी आर्थिक परिस्थिति से विवश होने से अर्थ प्राप्ती के लिए अत्यंत घिनौन मार्ग अपनातो है और अपना परिवार चलाती है।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में मनोविज्ञान की समस्या दिखाई है। जिन युवतियों का समय पर विवाह नहीं होता वह हीनता की भावनासे ग्रस्त हो जाती है जैसे मिस शास्त्री, सुषमा इस भावना की शिकार होती दिखाई देती है। मिस शास्त्री को दूसरों के व्यक्तिगत जीवन में झाँकर दिलचस्पी लेने की गंदी आदत है। वह अपने यौवनकाल में किसी युवक को आकृष्ट करने में सफल नही हुई, अत: अपनी अधेढावस्था में उन्हें किसी भी युवक-युवती का रोमांस फूटी आँखों न सुहाता था। ऐसी नारियों की वह प्रतिनिधी पात्र है, जो समाज के लिए एक समस्या बनकर रहती है वैसे ही ` रोमा ` सुषमा की सहकारी अध्यापिका रंगीन मिजाज की स्त्री है। वह क्षुद्र मनोवृत्ति की संकीर्ण विचारों की औरत है और मिस शास्त्री एक विकृत मनोवृत्ति की नारी है।

उषा प्रियंवदा जी स्वयं एक पढी लिखी कामकाजी नारी है। नौकरी करते समय नारी को घर-बाहर जिन समस्याओं से टकराना पड़ता है उसे उन्होंने अनुभव के स्तर पर जाना है। यही कारण है कि उन्होंने नौकरी पेशा नारी की समस्या को, उसके भावात्मक संघर्ष को गहरी संवेदना से परिवार में चित्रित किया है।

आज हमारे परिवार की अत्यंत ज्वलंत समस्या है शिक्षित बेरोजगारी की समस्या। औद्योगिकरण तथा बढती जनसंख्या के कारण समाज में नौकरी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, भटकना पड़ता है ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की सुषमा को भी नौकरी के लिए उसे कितना भटकना पडा और अब इस नौकरी को पाकर उसे लगा कि तूफान से बचकर उसकी जीवन नौका एक शांत बंदर गाह पर आ पहुँची। `[२]

इन सभी समस्याओं के साथ और भी समस्या है जैसे नारी की नारी के प्रति सहानुभूति का ना होना और नैतिक समस्या आदि समस्याओंका परिवार में चित्रण ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में किया है।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की पारिवारिक विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात एक बात सामने आती है कि समस्याओं का मूलकारण धन है। धन से ही सभी प्रकार ~~के~~ समस्याओं का जन्म होता है। अंत में कहूँगी कि परिवार भी एक लघुसमाज है और उनमें विभिन्न प्रकार की समस्याएँ होती ~~है~~ इन विभिन्न समस्याओं का निराकरण भी परिवार में होता है। समस्याओं के होते हुए भी परिवार में समय-समय पर उत्सव, राग-रंग, हँसी-खुशी, तीज-त्योहार आदि बनते रहते है।

इसी प्रकार उषा प्रियंवदाजी द्वारा लिखित -` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में चित्रित परिवारों की सुन्दर सी झलक दिखाई देती है।

इस शोध कार्य को पूरा करते समय मुझे निम्न प्रकार की अनुसंधान की उपलब्धियाँ मिली।

(१) उपन्यास का शीर्षक ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` बहुत ही सार्थक और उपयुक्त है, नायिका ` सुषमा ` के जीवन में बहुत ही अकेलापन था। तीस साल की उम्र में भी उसका विवाह नहीं हुआ था, परिवार को चलाने के लिए वह केवल धन की मशीन बनी हुई थी। उदासी, अकेलापन काटने के लिए वह

---

२ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण - १९८४, पृ.३५।

अपने कॉलेज की खम्भों को गिनती रहती थी । जिनकी संख्या `पचपन थी और उस पर बत्तियाँ झिलमिलाती है वह लाल दीवारें जिसकी हर खम्भे पर एक बत्ती थी जैसे बंदीगृह में ही उसकी जिन्दगी गुजर रही थी।

(२) `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास का संपूर्ण अध्ययन करने के पश्चात मुझे ऐसा लगा कि सुषमा जो शिक्षित है जो प्रौढ है,बुध्दिमान है, घर से बाहर रहकर काम कर रही है, सब प्रकार से समर्थ है उसने अपने जीवन के बारे में जो निर्णय लिया है वह किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है। आज शिक्षित महिला को इतना साहसी होना चाहिए की भावुकता में ना बहकर बुध्दिमानी से अपने भविष्य के बारें में सोचे,सुषमा ने केवल अपने परिवार के लिए नील के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और फिर वह अकेली `पचपन खम्भे लाल दीवारें` के बीच में घुट-घुट कर जीवन गुजारने लगी । अच्छा तो यही होता है कि वह नील से स्पष्ट शब्दों में कह देती कि परिवार को चलाने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है और यदि तुम मुझ से विवाह करना चाहते हो तो विवाह के पश्चात भी मै अपने परिवार की जिम्मेदारी को इसी प्रकार से उठाती रहूँगी यदि यह तुम्हें मंजुर हो तभी मै शादी करूँगी । मेरे विचार में इससे सुषमा का व्यक्तित्व और ही ज्यादा निखरता ।

(३) `आज की पढी-लिखी लडकियाँ सुषमा से ज्यादा व्यक्तिवादी विचारों की है अपने जीवन के बारे में जो भी फैसला वे लेंगी वह सोच समझकर लेंगी भावुकता में बहकर वह सुषमा की तरह अपने जीवन को दाँव पर नहीं लगायेंगी । आज की लडकियाँ भावुक ना होकर बुध्दिजीवी है ।

अंत में `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास पढकर मेरे मन में और एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि उषा प्रियंवदाजी जो भारत छोडकर अमरीका में रहती है,वही पर हिन्दी विभाग के प्रमुख पद पर कार्य कर रही है । वहाँ के भाषाविद् के विद्वान डॉ.विल्सन से उन्होंने शादी की । उषाजी ने अपने साहित्य में अमरीका में रहकर

विदेशी (भारतीय) नारीका चित्रण किया है। उन्होंने कुछ साहित्य अंग्रेजी में भी लिखा है, परंतु उसमें मन नहीं रमा और फिर से उन्होंने साहित्य हिन्दी में ही लिखना शुरु किया,इसलिए उषा प्रियंवदाजी के व्यक्तित्व से ऐसा लगता है कि वह बहुत बोल्ड,उच्च और स्वतन्त्र विचारों की महिला है,परंतु `पचपन खम्में लाल दीवारें, उपन्यास की नायिका ` सुषमा` को उन्होंने पढी-लिखी भारतीय संयुक्त परिवार की सनातनी महिला के रुप में दिखाया है, जो दब्बू है और मै कहूँगी कि उसमें थोडी साहस की भी कमी है और वह भारतीय स्वभाव के कारण बहुत भावुक भी है, अगर उषाजी नायिका सुषमा को भी बोल्ड दिखाती और सुषमा ठीक से सोच समझकर नील से विवाह करती और विवाह के पश्चात साहस से अपने परिवार की मदद करती लेकिन ऐसा नहीं दिखाया है अगर ऐसा दिखाती तो उपन्यास का रुप ही कुछ और होता। इस सन्दर्भ में मैंने उषा प्रियंवदाजी से पत्र व्यवहार किया है परंतु कोई उत्तर नहीं आया है और मै उनसे ही जानना चाहूँगी की उन्होंने सुषमा को` पचपन खम्में लाल दीवारें ` की कारगार से बाहर क्यों नहीं निकाला।

आज भी उनसे पत्रव्यवहार हो रहा है, मै उनके उत्तर के प्रतिक्षा में हूँ।

इस प्रकार मेरे शोध की यही अंतिम मंझिल नहीं है, अभी तो हिन्दी साहित्य के शोध मार्ग पर पहला कदम रखा है ....